

मैला आँचल : भाषा—शैली

दया शंकर कुमार

यू.जी.सी.—नेट/जे.आर.एफ.—2014

मेरी नजर में आंचलिक उपन्यास के रूप में मैला आँचल की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारण उसकी भाषा—शैली है। फणीश्वरनाथ रेणु ने भाषा के स्तर पर अद्भूत प्रयोगशीलता का परिचय देते हुए नई सृजनात्मक उपलब्धि हासिल की है जिसकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

मैला आँचल में सामान्यतः देशज भाषा का प्रयोग किया गया है क्योंकि आंचलिक संस्कृति में देशज शब्दावली केन्द्र में हाती है। इसके अतिरिक्त, तद्भव शब्दावली का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में किया गया है। उदाहरण के लिए:-

“तंत्रिमा टोली में आज घमाघम पंचायत हो रही है।”¹

“तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गम-गम करने लगता है।”²

अंग्रेजी के बहुत से शब्दों का प्रयोग किया गया है परन्तु रेणु उन शब्दों को भी आंचलिक तेवर के साथ लाए हैं। अंग्रेजी के शब्द गाँव में किस प्रकार विकृत और तद्भवीकृत हो जाते हैं, यह मैला आँचल की भाषा में लगातार दिखाई देता है। ये शब्द भी आंचलिकता को प्रमाणित करते हैं। उदाहरण के लिए भैंसचरमन (Vice Chairman), रायबरेली (Library), पुलोगराम (Programme), ओलरैट (All Right), टीसन (Station), फाहरम (Form)।

उपन्यास में कहीं-कहीं मानक भाषा का प्रयोग हुआ है जिसमें न सिर्फ तत्सम शब्दावली बल्कि संस्कृत की परिनिष्ठित शब्दावली भी आई है। ऐसे प्रसंग वहाँ हैं जहाँ डॉ. प्रशांत जैसे व्यक्ति कुछ सोचते हैं या कहते हैं। तत्सम भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है:-

“वेदान्त.....भौतिकवाद.....सापेक्षवाद.....मानवतावाद..... हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है। व्याध के तीर से जख्मी हिरण-शावक-सी मानवता को पनाह कहाँ मिले?”³

रेणु ने आंचलिक शैली का निर्वाह करते हुए लोकगीत तथा लोक संगीत के तत्व को उपन्यास में काफी अधिक स्थान दिया है। भउजिया के गीत, बिदापत के नृत्य और जाट-जट्टिन के खेल जैसे प्रसंगों में बहुत से लोकगीत आए हैं। उदाहरण के लिए:-

“याद जो आवे है प्यारी तोहरी सुरतिया से शाले करेजवा में तीर जी.....!”⁴

“हथवा रँगाय सैयाँ देहरी बैठाई गइले फिरहू न लिहले उदेश रे भउजिया।”⁵

आंचलिक भाषा शैली की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता होती है - मुहावरेदार भाषा का प्रयोग। मुहावरे और लोकोक्तियाँ चमत्कार पैदा करने के साधन हैं जो लोक जीवन के अनुभवों से ही निर्मित होते हैं। इसलिए, भाषा जितनी मुहावरेदार होती है, उसमें लोक जीवन की अनुभूतियाँ उतनी ही प्रामाणिकता से अभिव्यक्त होती हैं। मैला आँचल में जगह-जगह पर ऐसा भाषा दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए:-

“माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठण्डा कर देता है।”⁶

“सास्तर में कहा -जोरु ज़मीन जोर का, नहीं तो किसी और का।”

आंचलिक भाषा शैली का एक महत्वपूर्ण विशेषता है - शब्दों में निहित ध्वन्यात्मकता या नादात्मक क्षमता का प्रयोग। इसका अर्थ है-ध्वनियों का प्रयोग इस प्रकार करना कि ध्वनि-मैत्री से चमत्कार उत्पन्न होने लगे। साथ ही ध्वन्यात्मकता के प्रयोग से भाषा का अर्थवत्ता भी बढ़ जाती है क्योंकि विशेष ध्वनियाँ विशेष भावों को उत्पन्न करने में सक्षम होती हैं। उदाहरण के लिए :-

क) डिम-डिमिक-डिमिक

ख) गिड़ गिड़ गिड़ धा, गिड़धा गिड़धा

ग) धिन्ना-धिन्ना-धगिड़ धिन्ना

आंचलिक भाषा शैली में एक महत्वपूर्ण गुण अंतर-पादयता का होता है। इसका अर्थ है कि लोक संस्कृति में किसी बात को कहने के लिए किसी प्रसिद्ध ग्रंथ या धार्मिक परंपरा में चली आ रही बातों को बार-बार प्रमाण के तौर पर उद्धृत किया जाता है। मैला आँचल में ऐसे बहुत सारे प्रसंग आते हैं। उदाहरण के लिए :-

“हानि-लाभ जीवन-मरन जस-अपजस विधि हाथ।”

“बीजक से भी लछमी की देह की सुगंधी निकलती है। इस सुगंध में भी एक नशा है x x x x पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़ा सो पंडित होय।”⁷

“कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं दुनिया फूस बटोर चुकी है, मैं दो चिंगारी दे दूंगा।”

रेणु ने प्रतीकात्मक भाषा का भी काफी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं उनकी भाषा में प्रतीक और अप्रस्तुत इस प्रकार शामिल हो जाते हैं कि गद्य में पद्य की सुंदरता उत्पन्न होने लगती है। मैला आँचल का डॉ. प्रशांत ऐसी ही भाषा में कहता है:-

“मैं प्यार की खेती करना चाहता है। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएँगे।”⁸

आंचलिक उपन्यासकार अपने अंचल का जीवंत चित्र पाठक की आँखों में उतार देना चाहता है। इस उद्देश्य के लिए स्वाभाविक तौर पर उसे सुंदर बिम्बों का निर्माण करना पड़ता है ताकि ऐंद्रिक अनुभूति के स्तर पर अंचल को महसूस किया जा सके। रेणु ने न सिर्फ अंचल के भूगोल के सुंदर बिंब बनाए हैं बल्कि विभिन्न चरित्रों को भी बिंबों में उतार दिया है। उदाहरण के लिए :-

“गणेश की नानी! बुढ़ापे में भी जिसकी सुंदरता नष्ट नहीं हुई, जिसके चेहरे की झुर्रियों ने एक नई खूबसूरती ला दी है। सिर के सफेद बालों के घँघराले लट। होंठों की लाली ज्यों की त्यों है। × × × × सुंदर दंत पंक्तियाँ..... जवानी की सुंदरता आग लगाती है और बुढ़ापे की सुंदरता स्नेह बरसाती है।”⁹

आंचलिक जीवन में हास्य और व्यंग्य की उपस्थिति क्षण-क्षण महसूस की जा सकती है। आपसमें हँसी-मजाक व चुहल तथा अपने विरोधियों पर तीखे व्यंग्यों की बौछार करना किसी भी अंचल के जीवन का अनिवार्य अंग होता है। रेणु ने हास्य-व्यंग्य का बहुत अधिक प्रयोग किया है, विशेष रूप से वहाँ जहाँ वे खुद किसी पात्र की कड़वी सच्चाई उभारना चाहते हैं। भ्रष्ट महंत पर वे इस प्रकार व्यंग्य करते हैं-

“बुढ़ौती में तो आदमी की इंद्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, माया के प्रबल घात को नहीं संभाल सकती हैं। इसीलिए तो साधु ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महंथ साहेब का दोख नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि वह नहीं होती तो महंथ साहेब सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत है। दोष तो लछमी का है।”¹⁰

रेणु ने भाषा-शैली के स्तर पर चेतना प्रवाह शैली का एक विशेष प्रयोग किया है। यह शैली सामान्यतः मनोवैज्ञानिक

उपन्यासों में प्रयुक्त होती है, जिसमें लेखक किसी चरित्र के मन में आने वाले बेक़रम तथा बेतरतीब भावों की उसी प्रवाह में प्रस्तुत करता है जैसे वे मन में आते हैं। रेणु ने कमली की मनःस्थिति दिखाने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है :-

“अच्छा डाक्टर! सच-सच बताना, तुम क्यों मुस्कराते हो? तुम मुझे जलाने के लिए इस गाँव में क्यों आए? नहीं, नहीं, तुम नहीं आते तो पागल हो जाती। रोज सपने में कमला नदी का बाढ़ में मैं बह जाती थी। बड़े-बड़े साँप! तरह-तरह के साँप काटने दौड़ते थे। तुम आए, मैं डूबते-डूबते बच गई। × × × × तुम डाँटते हो, बड़ा अच्छा लगता है। तुम मुझे सुई से डराते हो, चिढ़ाते हो। कितना अच्छा लगता है मुझे! फिर मीठी दवा भेज दूंगा? × × × × तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है?”¹¹

यद्यपि मैला आँचल की भाषा की अत्यंत सृसनात्मक एवं प्रयोगशील है किन्तु यह निरापद नहीं है। इसने एक ओर रेणु को यह क्षमता दी कि वे मरीगंज के जीवन को उसके सारे रंगों व रेशों के साथ ईमानदारी से उभार सकें तो दूसरी ओर उपन्यास की बोधगम्यता के समक्ष चुनौती भी खड़ी की। जो पाठक मरीगंज या उसके आसपास के इलाके की बोली को नहीं जानता; यह भाषा उनके लिए दीवार बनकर खड़ी हो जाती है। कई देशज शब्द तो इतने कठिन हैं कि उनका आस्वादन ही नहीं, अर्थ-ग्रहण तक असंभव हो जाता है। अंग्रेजी के शब्द अंचल की जन-प्रवृत्ति के अनुसार विकृत रूप में आए हैं किन्तु इसी सहजता के कारण ये शब्द कभी-कभी बाहर के पाठक के लिए दुरुह हो गए हैं। आंचलिक गीतों ने इस समस्या को और ज्यादा जटिल बना दिया है। वस्तुतः यह समस्या सिर्फ रेणु या मैला आँचल की नहीं है, हर आंचलिक उपन्यास की है। यदि आंचलिक उपन्यास को सफल होना है तो उसकी यह शर्त है कि आंचलिक जीवन अपने पूरे देशीपन के साथ उभरे। यह करने के लिए आंचलिक भाषा अनिवार्य हो जाती है। इसलिए यह समझना जरूरी है कि रेणु की प्रयोगशील भाषा ने जहाँ आंचलिक उपन्यास के तौर पर मैला आँचल को मील का पत्थर बना दिया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि मैला आँचल की भाषा-शैली आंचलिकता के तत्व को पूरी तन्मयता से धारण करती है। यदि मैला आँचल आज तक सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जाता है तो उसका एक बड़ा कारण यह भाषा-शैली ही है।

संदर्भ :-

1. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-235
2. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-39
3. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-311
4. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-59
5. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-69
6. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-22
7. मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-48

- 8.मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-312
- 9.मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-97
- 10.मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-46
- 11.मैला आँचल/रेणु/राजकमल-संस्करण-2010/पृष्ठ-70